

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

# बालकनामा

आप भी बन सकते हैं  
बालकनामा अखबार का हिस्सा

- 1 लिखकर
- 2 खबरों की लीड देकर
- 3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गोतम नगर, नई दिल्ली-110049  
फोन नं. 011-41644471  
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-67 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | सितम्बर, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

## बाल मजदूरों की स्थिति

# कुछ नहीं बदला एक साल बाद भी

बालकनामा के पत्रकारों ने विभिन्न स्थानों का जायजा लिया। पेश हैं फोटो के साथ उनकी खबरें

खबरों में फोटो का बड़ा महत्व है। फोटो खबर का आइना होती है। फोटो सब कुछ साफ-साफ बयां कर देती है। अभिव्यक्ति का एक साक्ष्यपूर्ण माध्यम है। शायद यह आपके संज्ञान में हो कि भारत में 1931 में बनने वाली फिल्म "आलमआरा" पहली बोलती फिल्म थी। इससे पहले बनने वाली फिल्मों में केवल फोटो (चल-चित्रो/संकेतों) के माध्यम से ही अपनी बातों की अभिव्यक्ति की जाती थी। मूक फिल्में हुआ करती थीं। फोटो अभिव्यक्ति का आइना होती है। आइये फोटो से जानते हैं खबरों की सच्चाई।

### दक्षिणी दिल्ली की कुछ तस्वीरें



स्थान : सराय काले खां फ्लाई ओवर, बस अड्डा, राजापुर नगली, निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन।  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 340  
काम : होटल में बर्तन मांजना, पानी बेचना कबाड़ा बीनना, भीख मांगना आदि.



स्थान : लाजपत नगर कार पार्किंग, मेट्रो स्टेशन पुल के नीचे, सेंट्रल मार्केट।  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 310  
काम : गुब्बारे बेचना, नारा (गरी) बेचना, भीख मांगना, कबाड़ा बीनना, चाय की दुकान में काम करना, कपड़ों की दुकान में काम करना.



स्थान : कोटला फ्लाई ओवर, लालबत्ती.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 45  
काम : कमल बेचना, भीख मांगना.



स्थान : बटला हाऊस, नौ पार्क  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 35  
काम : कारपेन्ट्री करना, भीख मांगना, ढाबों पर काम करना.



स्थान : नेहरू प्लेस बाजार, लालबत्ती, पार्क  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 180  
काम : खिलौने बेचना, चार्जर व इयरफोन बेचना, स्क्रीन कार्ड एंड डिंपल कार्ड बेचना, पानी बेचना, खाने पीने वाले पदार्थ बेचना..



स्थान : आई आई टी गेट लालबत्ती, फ्लाई ओवर, पार्क.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 37  
काम : खिलौने बेचना, भीख मांगना, कार चार्जर व गाड़ी का डेस्टर बेचना, गुलदस्ता बेचना.

शेष पृष्ठ 2 पर



स्थान : लोधी रोड, साईबाबा मंदिर, लालबत्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 65  
काम : गुलदस्ता बेचना, भीख मांगना, जुत्ता चण्णल को जमा करते हैं.

**दक्षिणी दिल्ली की कुछ तस्वीरें**

पृष्ठ 1 का शेष



स्थान : कालकाजी मंदिर, डी डी ए पार्क, मेट्रो स्टेशन, लोट्स टेंपल..  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 135  
काम : भीख मांगना, चाय की दुकान पर काम करना, खिलौने बेचना, छोटी-मोटी दुकानों पर काम करना.



स्थान : जंगपुरा विस्तार, एन ब्लॉक, पार्क.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 21  
काम : मोमोज की दुकान लगाना, घरेलू कूड़ा कबाड़ा उठाना, पार्क में कबाड़ा बीनना.



स्थान : पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, खत्ता.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 64  
काम : भीख मांगना, कबाड़ा बीनना, रेलगाड़ी के अंदर झाड़ू लगाना, शादी पाटियों में काम करते हैं.

आपकी जानकारी हेतु उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त बालमजदूरी से संबंधित कुछ और भी स्थान हो सकते हैं

अनुमानित संख्या के अनुसार दक्षिण दिल्ली में लगभग 125 ऐसे स्थान हो सकते हैं जैसे कि :

बदरपुर बॉर्डर बस अड्डा, सुभाष कैंप, भाट कैंप, सांसी कैंप, तुगलकाबाद मेट्रो, जैतपुर मोड़, प्रहलादपुर चैक, तेहखंड, संगम विहार ऑटो स्टैंड, लाल कुआं, कबाड़ी बस्ती, निजामुद्दीन दरगाह, आई टी ओ लालबत्ती, जामा मस्जिद, लाल किला, चांदनी चैक, परांठे वाली गली, जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम के पास, खानपुर, तिगड़ी गांव, मूलचंद फ्लाई ओवर, डिफेंस कॉलोनी फ्लाई ओवर, सरोजनी नगर मार्किट, बी आर टी लालबत्ती, कैलाश कॉलोनी मेट्रो, गोविन्दपुरी मेट्रो, साकेत मेट्रो, खिड़की विस्तार साईबाबा मंदिर, कनाट प्लेस मॉल, पालिका बाजार, आंदन विहार रेलवे स्टेशन, महारौली झुग्गी बस्ती, पुस्ता भवन, हनुमान मंदिर, पेटी मार्किट, गोल मार्किट, राजीव चैक, त्रिलोकपुरी, इंडिया गेट, पहाड़गंज, सदर बाजार, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, बंगला साहिब गुरुद्वारा, दिल्ली कैंट लालबत्ती, बारापुला, भोगल मार्किट, कश्मीरी गेट बस अड्डा, बाबू पार्क, जाकिर नगर, खूशबू पार्क, सोनिया गांधी कैंप, आली गांव, खोरी गांव जाल बाग, लक्कड़पुर आदि।

औसतन अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या : 125 x 100 = 12,500

बातूनी रिपोर्टर सलमान, सागर, आंचल व रिपोर्टर शम्भू तथा ज्योति

**पश्चिम दिल्ली की कुछ तस्वीरें**



स्थान : चुना भट्टी बस्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 36  
काम : मैकेनिक, कोठी में काम करना.



स्थान : मायापुरी, लक्कड़ मंडी  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 156  
काम : फर्नीचर बनाना, बुरादा छांटना.



स्थान : शादीपुर  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 15  
काम : कबाड़ा बीनना, चाय की दुकान पर काम करना.



स्थान : कमला नेहरू कैंप  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 14  
काम : ढाबे पर काम करना फर्नीचर की कंपनियों में काम करना.



स्थान : जवाहर कैंप  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 21  
काम : ढाबे पर काम करना, शादी-पार्टी में काम करना.



स्थान : कंचन बस्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 52  
काम : कबाड़ा बीनना, नींबू मिर्च का नजरिया बनाना.



स्थान: बाल्मीकी कैंप  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 24  
काम: मरम्मत का काम करना (मैकेनिकी), फैक्ट्रियों में काम करना.



स्थान : लारेंस रोड फ्लाई ओवर के नीचे  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 22  
काम : नींबू-मिर्च का नजरिया बनाकर बेचना, भीख मांगना, कबाड़ा बीनना.



स्थान : लोहा मंडी  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 24  
काम : पीस रेट पर काम करना, होटल या ढाबे पर काम करना.



स्थान : नेहरू कैंप  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 49  
काम : जूस का टेला लगाना, कबाड़ा बीनना, बेलदारी ।

आपकी जानकारी हेतु उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त बालमजदूरी से संबंधित कुछ और भी स्थान हो सकते हैं

अनुमानित संख्या के अनुसार पश्चिम दिल्ली में लगभग 110 ऐसे स्थान हो सकते हैं जैसे कि :

वजीरपुर डिपो, सुदर्शन पार्क, इंडस्ट्रियल एरिया, आजादपुर मंडी, आदर्श नगर, मादीपुर, आग्रसेन अस्पताल के पास बस्ती, जखीरा, मंगोलपुरी, शकूरपुर व शकूरपुर गांव, शकूर बस्ती रेलवे कॉलोनी, पंजाबी बाग क्लब, पटेल नगर तथा लालबत्ती, रमेश नगर, शारदापुरी, शाहदरा, राजोरी गार्डन, कीर्तीनगर, मोतीनगर फ्लाई ओवर, राजा गार्डन, 535 झुग्गी बस्ती, आर के आश्रम लालबत्ती, ज्वालाहेडी मार्किट, पीरागढ़ी, मादीपुर लालबत्ती, झण्डेवालान मंदिर, अशोका पार्क मेट्रो स्टेशन, दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन, मानसरोवर गार्डन, राधे श्याम मंदिर, कठपुतली कॉलोनी, इंद्रलोक, राजेद्र प्लेस, इंद्रपुरी रेलवे स्टेशन, शहीद भगत सिंह कैंप, रघुवीर नगर, उत्तम नगर ईस्ट तथा वेस्ट, एन एस पी मॉल तथा बस्ती, प्रेमबाड़ी पुल, पायल सिनेमा पी वी आर, पांडव नगर, ख्याला, नागलोई, प्रेमनगर, सेवा नगर, तीस हजारी कोर्ट के पीछे बर्फ खाना, सागरपुर, सुभाष नगर, डाबडी मोडए.बसईदारापुर आदि.

औसतन अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या : 110 x 100 = 11,000

बातूनी रिपोर्टर अनिल, चांदनी, अमन व रिपोर्टर चेतन तथा दीपक

नोएडा की कुछ तस्वीरें



स्थान : आम्रपाली सैक्टर 73, सैक्टर 76  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 31  
काम : छोटी-मोटी दुकानें लगाना, पान व गुटखे बेचना, मिट्टी में दबे हुए लोहे एवं टीन निकालना.



स्थान : नोएडा सैक्टर 05, पेटिएम दफ्तर के पास  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 34  
काम : बटन बनाने का काम करना, राशन की दुकान पर काम करना.



स्थान : नोएडा सैक्टर 82, झुग्गी के पास  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 14  
काम : पान व गुटखे की दुकान लगाना, कबाड़ा बीनना.



स्थान : नोएडा सैक्टर 49  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 19  
काम : साइकिल की दुकान पर काम करना, राशन की दुकान पर काम करना, जूता.चप्पल की दुकानों पर काम करना.



स्थान : सरफाबाद झुग्गी  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 16  
काम : खेतों में काम करना, घरों में काम करना.



स्थान : छलेरा मार्किट, सैक्टर 44  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 9  
काम : साइकिल का टायर-ट्यूब काटकर लोहा निकालना, ढाबों पर झूठे बरतन धोना.



स्थान : अट्टा मार्किट व मॉल के बाहर, अशोक नगर.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 38  
काम : कबाड़ा बीनना, भीख मांगना ।



स्थान : नोएडा सैक्टर 16 मेट्रो पुल के नीचे, लालबत्ती.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 32  
काम : गुब्बारा बेचना, भीख मांगना, खेल दिखाना.



स्थान : नोएडा सैक्टर 74, लालबत्ती के पास  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 14  
काम : ढाबों पर काम करना, गन्ने के जूस की दुकान पर काम करना.



स्थान : नोएडा सैक्टर 18 पार्क के पास, मार्किट में.  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 28  
काम : कार ठीक करना, राशन की दुकानों में काम करना.

अनुमानित संख्या के अनुसार नोएडा में लगभग 50 ऐसे स्थान हो सकते हैं जैसे कि :

नोएडा सैक्टर 06 बाजार, नोएडा सैक्टर 50 मेट्रो फ्लाई ओवर के नीचे, नोएडा सैक्टर 24 चैड़ा गांव, नोएडा सैक्टर 42 झुग्गी, नोएडा सैक्टर 40 सदरपुर, नोएडा सैक्टर 44 छरेला, नोएडा सैक्टर 49 बरौला झुग्गी, नोएडा सैक्टर 53 गीजोड़ा, नोएडा सैक्टर 62 बस डिपो, नोएडा सैक्टर 65, नोएडा सैक्टर 66 ममूरा, नोएडा सैक्टर 79, नोएडा सैक्टर 84 भंगेल, नोएडा सैक्टर 101, नोएडा सैक्टर 104, नोएडा सैक्टर 105, नोएडा सैक्टर 106 आदि

औसतन अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या :  $50 \times 50 = 2,500$

बातूनी रिपोर्टर नबाव, संदीप, मजनू व रिपोर्टर शम्भू

मथुरा की कुछ तस्वीरें



स्थान : बैरिक बस्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 24  
काम : ठेला लगाना, जूता पॉलिस करना.



स्थान : इस्लाम नगर बस्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 92  
काम : पायल बनाना, सब्जियों की दुकान पर काम करना, कबाड़े की दुकान पर काम करना.



स्थान : मच्छी फाटक  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 22  
काम : चप्पल बेचना, सील बट्टा बेचना.



स्थान : भीम नगर मार्किट  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 21  
काम : दुकानों पर काम करना, ढाबों पर काम करना.



स्थान : स्टेट बैंक  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 14  
काम : बर्तन की दुकान पर काम करना, कपड़े की दुकान पर काम करना.



स्थान : डींग गेट तथा मंगल बाजार  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 43  
काम : जूता-चप्पल बेचना, फेरी लगाना.



स्थान : होली गेट  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 21  
काम : चाय की दुकान पर काम करना, फर्नीचर की दुकान पर काम करना.



स्थान : दरैसी रोड  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 34  
काम : भगवान का मुकुट बनाना, पायल बनाना.

अनुमानित संख्या के अनुसार मथुरा में लगभग 50 ऐसे स्थान हो सकते हैं, जैसे कि ;

बिरला मंदिर, भूतेश्वर, न्यु राधेश्याम कॉलोनी, मनीशपुरम, सुखदेव नगर, नितिन विहार, नभनीत नगर, कंकोड़, खट्टीक मौहल्ला, पुरानी मन्डी, बढपुरा, केशवदेव कट्टा आदि

औसतन अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या :  $50 \times 50 = 2,500$

बातूनी रिपोर्टर दीपक, लक्ष्मी, मुकेश व रिपोर्टर शम्भू



स्थान : मथुरा रेलवे स्टेशन तथा बस्ती  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 43  
काम : गुटखा बेचना, कबाड़ा बीनना, पानी बेचना, भीख मांगना, रेलगाड़ी में झाड़ू लगाना, तथा चने बेचना.



स्थान : चौक बाजार  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 32  
काम : मैकेनिक, दुकानों तथा ढाबों पर काम करना.



बच्चों ने रखी अपनी बात

- 13 वर्षीय दिया ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि जैसे मैंने रेलवे स्टेशन बस अड्डा बाजारों में कूड़ा कबाड़ा बीनने का काम किया है इस काम में हम बच्चों कि कोई इज्जत नहीं होती है इसलिए मैं चाहती हूँ कि लोग हम जैसे बच्चों को घृणा कि नजरो से ना देखकर स्नेह कि नजरो से देखे और इज्जत दे ।
- 14 वर्षीय राखी ने बताया कि हम सभी बच्चों का रहना का कोई ठिकाना नहीं है इसलिए हम अपने परिवार के साथ दरदर भटकते रहते है हम सभी बच्चे चाहते है कि लोग तथा सरकार हम बच्चों कि मदद करे ताकि हम बच्चों को इधर उधर भटकना ना पड़े ।
- 15 वर्षीय अजीत ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हम सभी यह चाहते हमारे माता पिता को रोजगार देना चाहिए ताकि हम बच्चों को इधर उधर भटकना ना पड़े ।
- 16 वर्षीय रिजबाना ने बताया कि हम सभी बच्चों का सपना है कि स्कूल में पढ़ाई लिखाई भी करू लेकिन कोई आई डी पुरूफ ना होने होने के कारण हमारा दाखिला नहीं हो पाता है इसलिए हम बच्चे चाहते है कि हमारा बिना आई डी पुरूफ के स्कूल में दाखिला हो जाए ताकि हम बच्चे भी पढ़ाई लिखाई करके अपने भविष्य को उज्वल बना सके ।

आगरा की कुछ तस्वीरें



स्थान : जगदीशपुरा, रेलवे स्टेशन  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 76  
काम : छोटी मोटी दुकानों पर काम करना, चाय की दुकान पर काम करना, वस्त्र की दुकान पर काम करना.



स्थान : बिल्लोचपुरा  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 26  
काम : सिलाई का काम करना, फैक्ट्रियों में काम करना, मार्किट में वस्त्र बेचना.



स्थान: रसूलपुर  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 65  
काम: पायल पर डिजाइन बनाना, मार्किट में बेचना.



स्थान : लालडगगी  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 42  
काम : पानी सफ़ाई करना, जुएं की समग्री बेचना.



स्थान : आजमपाड़ा  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 72  
काम : नींबू-मिर्च का नजरिया बनाकर बेचना, भीख मांगना.



स्थान : पृथ्वीनाथ  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 32  
काम : पीस तैयार करना, जूते के कारखाने में काम करना.



स्थान : कौशलपुर, नया घेर  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 130  
काम : जूता डिजाइन करना, तथा मार्केटिंग करना.



स्थान : नगला खुशहाली  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 36  
काम : पायल पर मोती चिपकाना, भीख मांगना.



स्थान : सदर भट्टी  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 58  
काम : ठेले पर खाने-पीने का पदार्थ बेचना, मार्किट में सब्जियां बेचना



स्थान : आगरा कैंट, रेलवे स्टेशन  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 36  
काम : कबाड़ा बीनना, रेलगाड़ी के अंदर झाड़ू लगाना, भीख मांगना.

## गलत परिस्थिति में साथ छोड़ा भाईयों ने जिसके बदौलत समीर हुआ बाल मजदूरी का शिकार

बातूनी रिपोर्टर समीर व रिपोर्टर पूनम

12 वर्षीय समीर अपने परिवारे कि जिम्मेदारी अपने कंधो पर उठाते हुए स्कूल जाना त्याग दिया और बालमजदूरी के चुगल में लिप्त हो गया आईए विस्तार से जानते है कि किस प्रकार समीर ने स्कूल जाना क्यों छोड़ दिया और बालमजदूरी के शिकार हो गया । समीर अपने परिवार के साथ नया घेर में रहता है समीर के परिवार में कुल आठ सदस्य है 6 भाई बहन व माता पिता । पिता भूतकाल में रिकशा चलाने का कार्य करते थे और मम्मी मजदूरी के कार्य करती थी जब समीर अपने मजे में पढ़ाई लिखाई करता था समय के अनुसार समीर के मम्मी को हैजा जैसी बिमारियों ने जकड़ लिया जिसके चिंता में समीर के पिता ने नशा करना शुरू कर दिया और वर्तमान में वह बहुत शराब पीने लगे है शराब पीकर सड़क पर इधर उधर सोए हुए रहते है और उनके लबज से एक शब्द निकलता है कोई मेरी मदद करो ताकि मैं अपनी पति का इलाज करा सकू । इस परिस्थिति को देखकर समीर के चार बड़े भाई जो शादीशुदा है वह अलग रहने का निर्णय लिया इस बात में चिंतित होकर



समीर के माता कि तबीयत और बिगड़ती जा रही थी इसलिए समीर ने खुद निर्णय लिया कि अब मैं अपनी माता का इलाज खुद करवाऊंगा और वर्तमान में एक पंतग व मांजे कि दुकान पर 12 घंटे काम कर रहा है जिससे समीर को प्रतिमाह 1200 रुपए मिल जाते है इन्ही पैसे से समीर घर का खर्चा निकालता है और अपनी माता का इलाज कराता है समीर का कहना है कि किसी तरह मेरी माता कि तबीयत ठीक हो जाए । फिर मैं दोबारा स्कूल जाना शुरू कर दूंगा क्योंकि समीर को पढ़ाई से बहुत स्नेह है ।

अनुमानित संख्या के अनुसार आगरा कैंट में लगभग 109 ऐसे स्थान हो सकते हैं, जैसे कि :

लोहामंडी, बिलोचपुरा, गरीब नगर, घेरा वाली बस्ती, राज नगर, जगजीवन नगर, मालवाड़ी, नया बांस, संजय पेलेस, राजा की मंडी, आनंद विहार, बिसातगंज, सचता ग्राम, गोकुलपुरा टीला, ईदगाहबाद, नई बस्ती, बाल्मीकी बस्ती, नगला बुडान सैयद, बाजीपुरा, कछपुरा, गोलपुरा, सोंट की मंडी, तेलीपाड़ा, बाग मुजफ्फरखान, खातीपाड़ा, खटीकपाड़ा, करवान बस्ती, बर्फखाना, गौतम नगर, सिरकी मंडी, बारह खम्बा, खंदारी, शम्भू नगर, खतैन, अब्बास नगर, चरन सिंह का वाड़ा, सुंदर पाड़ा, गरीब नगर, तमोली पाड़ा, पंद्रह क्वार्टर, विद्या नगर, बजरंग वाली गली, बोदला, नगला गंगाराम आदि.

औसतन अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या :  $109 \times 100 = 10,900$

बातूनी रिपोर्टर प्रियंकाए अमनए नींदा व रिपोर्टर पूनम

लखनऊ मथुरा की कुछ तस्वीरें



स्थान : कैसरबाग  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 15  
काम : भीख मांगना, छोटे मोटे दुकानों पर काम करना.



स्थान : इंजीनियरिंग चौराहा  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 16  
काम: भीख मांगना, कबाड़ा बीनना.



स्थान : भूतनाथ बाजार  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 22  
काम : नारा बेचना, रस्सी बेचना-भीख मांगना.



स्थान : अमीनाबाद  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 42  
काम : दुकानों से कूड़ा कबाड़ा बीनना, भीख मांगना.



स्थान : टेड़ीपुलिया  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 25  
काम : साप का खेल दिखाना, भीख मांगना.



स्थान : मढ़गांव  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या : 23  
काम : भीख मांगना, कबाड़ा बीनना.



स्थान : चारबाग  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 62  
काम : बसों में भीख मांगना, पानी बेचना, बसों में झाड़ू लगाना.

अनुमानित संख्या के अनुसार लखनऊ में लगभग 61 ऐसे स्थान हो सकते हैं जैसे कि :

पत्रकारपुरम पार्क, हजरतगंज, कपूरथला, गोल मार्केट महानगर, निशातगंज, मुन्नसी पुलिया, डालीगंज पुल, पड़रिया चौराहा, हुसैनगंज बस स्टॉप, लां प्लेस, ख्यालागंज, बटर फ्लाई ओवर, सुलतान प्लेस, नाका हिंडोली, चारबत्ती चौराहा, लोहा बाजार, परिवर्तन चौक, नजीराबाद आदि.

औसत अनुमानित बाल मजदूरों की संख्या:  $61 \times 50 = 3,050$

बातूनी रिपोर्टर : आंचल, संगीता

बालकनामा की पत्रकार टीम ने कई शहरों, बस्तियों आदि में मौके पर जाकर बाल मजदूरी कर रहे बच्चों से मिल कर बाल मजदूरों की सही संख्या जानने की कोशिश की। बातचीत और पड़ताल में क्षेत्र व स्थान वार जो आंकड़े हम जुटा पाये उन्हें हमने आपके सामने पटल पर रखा। जिन स्थानों के आंकड़े यहां हमने पेश किये हैं, उन स्थानों पर केवल हमारे द्वारा दिये गये आंकड़े के अनुसार ही बाल मजदूर हैं, ऐसा ही नहीं है। अल्प साधनों में हमारी कोशिश के अनुसार जितने आंकड़े हम जुटा सके वही आंकड़े हमने आपके सामने पेश किये हैं। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सारे बाल मजदूर हो सकते हैं जो हमारी पड़ताल में छूट गये होंगे।



स्थान : पॉलीटेक्निक चौराहा  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या :35  
काम : बसों में पानी बेचना, भीख मांगना.



स्थान : मड़ियांव  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 12  
काम : भीख मांगना, छोटे-मोटे ढाबों पर काम करना.



स्थान : चौक  
बाल मजदूरों की अनुमानित संख्या: 26  
काम : पानी बेचना, भीख मांगना.

## जनजागरूकता के लिए बाल मजदूरी पर कुछ स्लोगन

बाल मजदूरी से समाज और सरकार को वाकिफ कराने के लिए बालकनामा टीम हर उस काम और क्षेत्र की जानकारियां-खबरें समाज और सरकार तक अपने समाचर पत्र "बालकनामा" के माध्यम से यथासंभव पेश कराती रहती है। बाल मजदूरी समाज के बीच में एक बड़ी परेशानी बन कर उभर रही है. बाल मजदूरी एक ऐसा कलंक है जिसे इस समाज से जितनी जल्दी हो सके मिटा देना ही अच्छा है। किसी देश में कितने बाल मजदूर हैं, इससे पता चलता है कि उस देश का विकास किस दिशा में हो रहा है। सामाजिक और जनजागरूकता के मकसद से बहुत ही सरल भाषा में बाल मजदूरी पर पेश हैं कुछ स्लोगन -

जनजागरूकता के लिए बाल मजदूरी पर कुछ स्लोगन

आँखों में 'छोटू' स्थान पे पुत्र को लाओ  
बाल मजदूर को उसका इन्साफ दिलाओ

वे भी बच्चे हैं और मन के सच्चे हैं  
बाल मजदूर भी बच्चे  
तकदीर से कच्चे हैं फिर भी अच्छे हैं

बचपन कहाँ खो गया, वो मासूम क्या बताएगा  
जीवन सड़क पर गुजर गया, वो कैसे बताएगा

आप समर्थ हों तो किसी गरीब बालक को पढ़ाएँ,  
ताकि धन के अभाव में वह मजदूरी पर न जाएँ।

पाठकों के पत्र

**निशिंगंध भांबिद**

मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं आपके और आपकी टीम द्वारा किए गए प्रयासों से आश्चर्यचकित हूँ, कि आपने दूरदराज के सपने को वास्तविकता में बदल दिया।

**आशुतोष पाटिल**

मैं आशुतोष पाटिल, औरंगाबाद, महाराष्ट्र से हूँ। मैं आपके काम से बहुत प्रेरित हूँ आप महान काम कर रहे हैं, इसे जारी रखें। मैं अपने राज्य महाराष्ट्र में भी इस तरह के समाचार पत्र को शुरू करने में दिलचस्पी रखता हूँ, मुझे इसके लिए आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। क्या इसे 'शुरू करने में मेरा मार्गदर्शन और मदद करेंगे ?

**एलेक्स वाल**

मैंने "अल जजीरा और 101" आपके बारे में बनी फिल्म देखी, इसे देखकर मैं रोया भी। मैं आपके लचीलापन और धैर्य पर हैरान हूँ। आप मेरे हीरो हैं। मुझे आपका अखबार पढ़ना अच्छा लगता है। मैं आपकी वेबसाइट पर साइनअप नहीं कर पा रहा हूँ। कोई अन्य तरीका है जिससे मैं सदस्यता ले सकता हूँ? मैं यह भी जानना चाहूँगा कि मैं आपकी सहायता करने के लिए क्या कर सकता हूँ। कृपया मुझे बताएं कि हम आपकी कैसे मदद कर सकते हैं।

**किंशु डांग**

मैं दिल्ली स्थित एक पत्रकार और शोधकर्ता किंशु डांग हूँ। मैं आपको और आपकी टीम को कड़ी मेहनत और दृढ़ता के लिए बधाई देना चाहता हूँ।

**ट्रेसी मैकिलयोद**

मैं हाल ही में कनाडा से चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में आयी हूँ। मैंने "अल जजीरा 101" में आपके न्यूज पेपर के बारे में एक कहानी देखी। मैंने पेपर के अंग्रेजी संस्करण से लिंक करने की कोशिश की लेकिन वेब लिंक टूट गयी। क्या कोई आपके पेपर को देख सकता है ? क्या वह लिंक को ठीक कर सकता है ? इसके अलावा मैं आपके पेपर की कॉपी कहाँ प्राप्त कर सकती हूँ।

**रिया, कनिष्क**

हम हाल ही में अपने काम में आप और वास्तव में इसके द्वारा हमें बहुत ही प्रेरणा मिली है। हम आपके ही समान स्थान पर काम कर रहे हैं - मुख्य रूप से अंग्रेजी, और चर्चा करने के लिए मिलना सही रहेगा। आप यहाँ हमारे काम को देख सकते हैं-<http://www.girlffect.org/what-we-do> क्या हम एक बैठक की व्यवस्था कर सकते हैं? हमारी दो टीम आने वाले दिनों में दिल्ली में पहुँचेंगी।

**केरली सीनी**

मैंने हाल ही में आपके अखबार के बारे में एक वृत्तचित्र को ऑस्ट्रेलिया में कॉलिस्ट वेटेनबर्ग द्वारा देखा है मैं इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर किशोरोसेंट हेल्थ कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए अक्टूबर के अंत में दिल्ली आ रही हूँ। मैं वास्तव में आपकी टीम से मिलना चाहूँगा। क्या यह संभव है? इसके अलावा मैं मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया में रॉयल बच्चों के अस्पताल में किशोरों के स्वास्थ्य केंद्र में काम करती हूँ। मुझे लगता है कि यहाँ बहुत से कर्मचारियों को आपके काम करने के बारे में सुनना और आपकी सहायता करने में बहुत दिलचस्पी होगी। हम किस तरीके से आपके अखबार में सहयोग कर सकते हैं? कृपया मुझे बताएं।

धन्यवाद साथियों, जो आपने हमारी मेहनत और कार्य को सराहा है तथा अपनी भावनायें हमें लिख भेजी हैं। हमें यह पढ़कर बहुत खुशी हुई। बालकनामा टीम आपके पत्रों और सुझावों से बेहद उत्साहित है। उम्मीद है आगे भी आप पाठकगण हमें पत्र लिखते रहेंगे और प्रोत्साहित करते रहेंगे।

- बालकनामा टीम

**संपादकीय**

प्रिय साथियों,  
नमस्कार !

"बालकनामा" का 67वाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हम बेहद उत्साहित हैं। इसबार हमने जरा हट कर आप तक खबरें पहुँचाने का माध्यम चुना है, और वह है 'फोटो'। उम्मीद है हमारा यह नया तरीका आपको पसंद आया होगा। फोटो के माध्यम से हमने आपको यह बताने की कोशिश की है कि किन-किन स्थानों पर बाल मजदूरी होती है। फोटो के माध्यम से इसलिए ताकि पाठक गण को अपने क्षेत्र के हालातों के बारे में जानकारी मिल सके; और बालकनामा में छपने वाली खबरों की सच्चाई से भी रू-ब-रू हो सकें।

आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएं हमारा संबल हैं, हमारा प्रोत्साहन हैं, और लगन से काम करने की प्रेरणाएं हैं। अतः आपसे निवेदन है कि अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएं हमें अवश्य भेजें, ताकि हम और मेहनत के साथ बच्चों की समस्याओं और उनके हालातों को समाज तथा शासन@प्रशासन के सामने बालकनामा के माध्यम से इस उम्मीद के साथ रखते रहें, ताकि उन्हें भी समाज की मुख्यधारा से जुड़कर जीने का हक और सुविधाएं मिल सकें।

संपादकीय टीम

**कौन सुनेगा संधिया पुकार?**



बातूनी रिपोर्टर संधिया व रिपोर्टर दिपक

12 वर्षीय संधिया अपने परिवार के साथ बिहार के एक छोटे से गांव समस्तीपुर में रहती है वर्तमान में संधिया बिहार के छोटे मोटे स्टेशन पर भीख मांगती नजर आ रही है यह देखकर पत्रकार ने संधिया के पास जा पहुंचा और संधिया से बात करने कि कोशिश की। कि इतनी छोटी उम्र में भीख क्यों मांग रही हो ?

संधिया ने बताया कि भईया मेरा घर कि परिस्थिती बहुत खराब है इसलिए मजबूरन मुझे भीख मांगना पड़ता है संधिया ने अपने बारे

में जिक्र करते हुए कहा कि तीन साल पहले मेरे पिता कि मृत्यु हो गई थी जब उनका अंतिम संस्कार करने के लिए गांव वाले से पांच हजार रुपए कर्ज लिया था जिसे लौटाने के लिए मैं और मेरी मम्मी दिनरात मेहनत करते है।

हमारी मम्मी दूसरे के खेतों में काम करती है तब जाकर हमारे घर का खर्चा चलता है दुख कि बात यह है कि मेरी मम्मी को भी टी बी की बिमारी है इस बिमारी की वजह से मेरी मम्मी हर वक्त बिमार रहती है लेकिन इलाज कराने के लिए पैसे भी नही है हम गांव वाले से दोवारा कर्ज मांगने के लिए गए थे तो गांव वाले ने कर्ज देने से

इंकार कर दिया उनका कहना है कि पहले वाला पैसा तो लौटाया ही नही और दोवारा फिर कर्ज मांगने आ गए हो।

मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि जिस तरह पापा का साथ छूट गया वैसे मम्मी का भी साथ ना छूट जाए इसलिए मैं कड़ी मेहनत करती हूँ ताकि मैं कुछ पैसे कमाई लूँ और मम्मी कि इलाज करा सकूँ।

संधिया ने बताया कि जब मैं रेलगाड़ी में भीख मांगने के लिए जाती हूँ तो पुलिस वाले भईया मारने के लिए दौड़ते है मैं यही चाहती हूँ कि जिन तक यह संदेश पहुंचे कृपया हमारी मदद करे।

**अपनी भूख मिटाने दर दर भटकते हैं बच्चे**

**बातूनी रिपोर्टर सचिन**

15 वर्षीय सचिन ने बताया कि हम बच्चे इतने उदास इसलिए बैठे है कि सुबह से दोपहर हो गई है पर हमें खाने को कुछ भी नही मिला है हम भूख के मारे तड़प रहे है इसलिए हम बच्चे पास में ही एक बाजार है उस बाजार में एक बहुत बड़ा मोल है वहां पर बाहर के लोग घूमने फिरने आते है वह अपने खाने के लिए कुछ ना कुछ खरीदते है लेकिन वह लोग थोड़ा बहुत खाकर बाकी बचा हुआ खाना वह कूड़ेदान में फेंक देते है उसी खाने को हम कूड़ेदान से निकालकर खा लेते है और इस खाने से हम अपना पेट भर लेते है लेकिन दुख कि बात यह कि इस बाजार के कुछ गार्ड अंकल बहुत दुष्ट है वह हम सभी बच्चों को डन्डे से मारने के लिए दौड़ते है। इसलिए



हम बच्चे इधर उधर घूमते रहते है ताकि हम बच्चों को खाने को कुछ मिल जाए है भूतकाल में हम बच्चे इसी परेशानी से जुझते हुए भीख मांगने का काम शुरू किया था लेकिन पब्लिक हम बच्चों को भीख नही देती

थी और पब्लिक हम बच्चों से इस तरह कि बात बोलती है कि तुम बच्चों को कोई कामकाज नही है जो भीख मांगने निकल पड़ते हो ? और यह भी कहते है कि इनका तो यह रोज का पेशा है इसलिए हम बच्चे करें

भी तो क्या करें दरदर भटकने के अलावा हम कर भी क्या सकते हैं अपना पेट भरने के लिए कभी कभी हमें चोरी करने को मजबूर होना पड़ता है इस भूख प्यास ने हमें चोरी करना भी सिखा दिया।

# बाल मजदूरी और जनजागरूकता

बालकनामा टीम

बाल मजदूरी से मतलब बच्चों से कराया जाने वाला काम, फिर चाहे वह उनके मालिकों द्वारा करवाया जाता है या फिर गरीबी के चलते उन्हें मजबूरन करना पड़ता है। बाल मजदूरी एक गंभीर समस्या है जिसके कारण गरीब बच्चों का भविष्य अंधकार में है। बाल मजदूरी समाज की प्रमुख बुराईयों में से एक है। ऐसा नहीं है कि बाल मजदूरी केवल भारत की ही समस्या है, प्राप्त आंकड़ों तथा सूचनाओं के आधार पर पूरी दुनिया में ही बच्चे बाल मजदूरी के शिकार हैं।

गरीब माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च नहीं उठा पाते हैं। वे अपने परिवार के भरण-पोषण लायक पैसा नहीं कमा पाते हैं फिर बच्चों की शिक्षा का खर्च कैसे उठाएंगे। इसलिए ज्यादातर माता-पिता मजबूरन अपने बच्चों को बचपन में ही काम पर लगा देते हैं। वे ज्यादातर ढाबों, दुकानों, होटलों, निर्माण क्षेत्रों में काम करते हैं। इस कारण बच्चे बचपन और शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। बच्चे देश का भविष्य होते हैं लेकिन जिस तरह से बच्चे बाल मजदूरी में फंसते जा रहे हैं, उससे तो लगता है कि बच्चे देश का भविष्य न होकर देश पर

बोझ बनते जा रहे हैं। उन्हें तिरष्कार का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें छोटी उम्र में ही काम पर लगा दिया जाता है। आज पूरे समाज में गैर कानूनी तरीके से बच्चों के अधिकारों का हनन किया जा रहा है।

सरकार द्वारा बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए बहुत सारे जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, बावजूद इसके गरीब घरों के ज्यादातर बच्चे बाल मजदूरी करने के लिए मजबूर हैं।

यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से सरकार द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए कड़े कदम उठाए गये हैं ताकि कोई भी बच्चा बाल मजदूरी में न फंसे। गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दी जा रही है। इसके लिए उनके माता-पिता को प्रेरित किया जा रहा है। जरूरत है जन जागरूकता की, जन सहभागिता की। बाल मजदूरों के बच्चों के माता-पिता को सरकार द्वारा उठाए कदमों से वाकिफ कराने की। यह एक सामाजिक बीमारी है जो पूरे समाज को खोखला कर रही है। इसे समाज से जड़ से खत्म करने की जरूरत है। अतः बाल मजदूरी से बच्चों को बचाने की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं बल्कि देश के हर नागरिक की है। आओ आगे बढ़कर हम अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाने का प्रण लें, ताकि बाल मजदूरी का खात्मा हो और सुंदर, सुखमय समाज का निर्माण हो सके।



पानी बेचकर परिवार का खर्च चलाते बच्चे



भूख की खातिर बाल मजदूरी करते बच्चे



पढ़ने लिखने की उम्र में बालमजदूरी की ओर बढ़ते बच्चे



होटल या ढाबों पर बाल मजदूरी में खपते बच्चे



गरीबी के चलते घर में भी बालमजदूरी करते बच्चे

## बदबू के शिकार मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अंजु व रिपोर्टर ज्योति

एक स्थान जिसका नाम गुप्त रखा गया है इस जगह पर लगभग आठ सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों में रहने वाले कुछ लोग झांसी व बंगाल के हैं। यह अपने घर का खर्चा चलाने के लिए मजदूरी तथा कबाड़ा बीनने के कार्य करते हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी मिली कि इस झुग्गियों के पास एक बहुत बड़ा नाला है जो काफी गहरा व जानलेवा है। वहां के रहने वाले बच्चों ने बताया कि इस नाले में आये दिन कोई न कोई घटना होती रहता है। दूसरी बात यह है कि इस नाले के पास झुग्गी में रहने वाले लोग वस्त्र व तिरपाल से शौचलय बना रखे हैं जिसे माता पिता तथा बच्चे इस्तेमाल करते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) खुशी का कहना है कि इस नाले में घटना के साथ साथ एक और समस्या यह है कि जो शौचलय बने हुए हैं, जिन्हें हमलोग इस्तेमाल करते हैं, इस शौचलय की सारी गंदगी इसी नाले में जाती है। इस कारण इस नाले में से बहुत गंदी बदबू आती है। हमारी झुग्गी इस नाले से काफी पास है। खानपान करते वक्त ऐसा लगता है कि अब उल्टी ही आ जाएगी। क्योंकि कभी झुग्गी में पालतू जानवर मर जाते हैं तो लोग उस जानवर को इसी नाले में फेकते हैं। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अंजु ने बताया कि हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस समस्या पर जल्द से जल्द कार्यवाही हो, क्योंकि इस



समस्या की वजह से हम बच्चे आये दिन बीमारियों के चंगुल में फंसे रहते हैं। जब हम डाक्टर के पास इलाज कराने के लिए जाते हैं तो डाक्टर हमेशा सलाह देता है कि आप जिस स्थान पर रह रहे हो उस स्थान से कहीं और चले जाइए, तभी आपलोग इस परेशानी से छूटकारा पा सकते हैं।

43 वर्षीय (परिवर्तित नाम) श्रीमती कोमल देवी जी का कहना है कि अगर हम इस जगह से कहीं और चले गए तो हमारा घर का खर्चा कैसे चलेगा ? क्योंकि जिस जगह पर हम अभी रह रहे हैं, वहां काफी सारे निवास बन रहे हैं, तंथा कूड़ा कबाड़ा भी अधिक मिल रहा है। माता पिता का कहना है कि हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सभी गरीबों के लिए शौचलय बना रहे हैं, वैसे ही हमलोगों के लिए भी बना दें, ताकि हम सभी परिवार के साथ शौचलय का उपयोग कर सकें।

## जनजागरूकता के लिए बाल मजदूरी पर कुछ स्लोगन

पृष्ठ 6 का शेष

पढ़ाई पर अब ध्यान धरें, मजदूरी करना बंद करें

हमने अब है ये ठाना, बाल मजदूरी को जड़ से मिटाना.

बाल मजदूरी की रोक थाम, हम सब मिल करें ये काम. बच्चों से मत बाल मजदूरी करवाओ। नन्हें हाथों को ना दुख पहुंचाओ।

माता पिता दुश्मन बन जाते हैं, जब वो नन्हें हाथों से काम करवाते हैं.

बच्चे हैं भगवान स्वरूप, श्रम करवाना नहीं अनुरूप

अगर देश को मजबूत बनाना है. तो इस बाल मजदूरी को हटाना है.

वो अभी छोटे हैं उन्हें अभी ज्ञान

पाने दो, पैसे तो वो सारी जिन्दगी कमाएंगे

शिक्षा उनका जन्मसिद्ध अधिकार है, उन्हें मजदूरी पर न लगायें।

बालक सभी समर्थ बनें, अपने कौशल का विकास करें।

अभी तो हमको करनी हैं पढ़ाई, मत करवाओ हमसे कसरत और

कमाई.

बचपन संवारिये देश बढ़ाइये, बाल मजदूरी रोकिये बचपन बचाइये

बाल मजदूरी है अभिशाप, बालको से मजदूरी करवाना है पाप.

यथोचित ज्ञान और शिक्षा पाएँ, जागरूक हो श्रम शोषण से बचाएँ

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पॉन्सर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।